

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता, सत्र 2, पवित्र आत्मा ईश्वर है

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन की पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 2 है। पवित्र आत्मा ईश्वर है।

हम पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के साथ काम कर रहे हैं, इससे पहले कि हम उसके कार्यों के बारे में बात करें, और उद्धार में उसका मुख्य कार्य मसीह के साथ एकता है। हम यहीं जा रहे हैं, लेकिन आत्मा के व्यक्तित्व के बारे में सोचकर धर्मशास्त्रीय आधार तैयार करना महत्वपूर्ण है। हमने उसका व्यक्तित्व स्थापित कर लिया है।

वह मात्र एक शक्ति नहीं है, बल्कि बुद्धि, भावना और इच्छाशक्ति वाला एक व्यक्ति है। और वह केवल एक व्यक्ति ही नहीं, बल्कि एक दिव्य व्यक्ति है। आत्मा के ईश्वरत्व के प्रमाणों में ये शामिल हैं।

उसमें ऐसे गुण हैं जो केवल परमेश्वर के पास हैं। वह ऐसे काम करता है जो केवल परमेश्वर ही कर सकता है। उसका नाम परमेश्वर के नाम के साथ बदल दिया जाता है, और वह पिता और पुत्र के साथ ऐसे तरीके से जुड़ा है जो केवल परमेश्वर के लिए ही उपयुक्त है।

दिव्य गुण, दिव्य कार्य, दिव्य नाम के साथ अदला-बदली, और पिता और पुत्र के साथ एक अद्वितीय संबंध जो केवल स्वयं ईश्वर के लिए उपयुक्त है। आत्मा ईश्वर है। मैं यहाँ तुरंत कह सकता हूँ, अगर हम बाइबल को ईश्वर की कहानी के रूप में देखते हैं, जो एक बड़ा दिव्य नाटक है, तो ईश्वर पिता एक निर्देशक और उनके निर्माता हैं, अगर आप चाहें तो।

सितारा ईश्वर का पुत्र, मसीह है। सितारा पवित्र आत्मा नहीं है। सह-कलाकार, अविश्वसनीय रूप से अनुग्रह से, ईश्वर के लोग हैं।

बेटा एक सितारा है। हम भगवान की कृपा से सह-कलाकार हैं। मैं आत्मा को सहायक अभिनेता कहूंगा। ओह, वह भगवान है।

लेकिन मैं यह दिखाने के लिए कह रहा हूँ, उदाहरण के लिए, कि पुत्र के ईश्वरत्व के बाइबलीय प्रमाण आत्मा के ईश्वरत्व के प्रमाणों की तुलना में बहुत अधिक हैं और यहाँ तक कि अधिक स्पष्ट भी हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह एक सहायक अभिनेता के रूप में भूमिका निभाता है। वह पुत्र की तरह सुर्खियों में नहीं है, और ईश्वर की कृपा से, जो हम अक्सर होते हैं, आत्मा छाया में है।

फिर भी, हमारे पास उसकी दिव्यता को दर्शाने के लिए पर्याप्त डेटा है। आत्मा में दिव्य गुण हैं। जॉन ने अपने विदाई भाषणों में कम से कम तीन अंशों में उसे सत्य की आत्मा कहा है।

यूहन्ना 14, सत्य की आत्मा के रूप में, परमेश्वर के प्रकटकर्ता के रूप में यीशु का स्थान लेता है। मैंने पहले भी कई बार कहा है। आत्मा यीशु का दूसरा रूप है।

यीशु जाते हैं, पिता और पुत्र आत्मा को भेजते हैं। आत्मा उन सेवकाईयों को जारी रखती है जो यीशु ने तब तक की थीं। और सत्य की आत्मा के रूप में, वह यीशु का स्थान लेता है, जो परमेश्वर को प्रकट करने वाला, परमेश्वर को प्रकट करने वाला अद्वितीय व्यक्ति है।

14:17, पिता तुम्हें एक और सहायक देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा। सत्य की आत्मा भी, संसार उसे ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह न तो उसे देखता है और न ही उसे जानता है। संसार निराशाजनक रूप से अनुभववादी है।

वह केवल वही मानता है जो वह देखता है। पवित्र आत्मा एक आत्मा है, और उसे देखा नहीं जा सकता। इसलिए, दुनिया उस पर विश्वास नहीं करती।

हालाँकि, विश्वासियों, तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और तुम्हारे अंदर रहेगा। वह ईश्वरीय सत्य की आत्मा है। 1: 5, 26, यह वही है।

जब सहायक आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा, जो पिता की ओर से निकलता है, वह मेरे बारे में गवाही देगा। और अगले पद में, शिष्य अपनी गवाही में उसमें उलझे हुए हैं। इसका तात्पर्य यह है कि वे पवित्र आत्मा की शक्ति से यीशु की गवाही देते हैं।

16:13, फिर से, यूहन्ना 14, 15, और अब 16, 13 में सत्य की आत्मा के पदनाम के बारे में हमारे छोटे से सर्वेक्षण को पूरा करता है। जब सत्य की आत्मा आती है, तो वह आपको सभी सत्य में मार्गदर्शन करेगी। वह सत्य की आत्मा है क्योंकि वह यीशु को प्रकट करने का परमेश्वर का कार्य करता है।

और फिर, अगर हम में से जो लोग इन अंशों को यीशु द्वारा नए नियम के पूर्व-प्रमाणीकरण के रूप में मानते हैं, वे सही हैं, तो यीशु कह रहे हैं कि आत्मा प्रेरितों के माध्यम से नया नियम देगा। वह उनके उपदेशों को प्रेरित करेगा ताकि उनका उपदेश परमेश्वर की ओर से प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन हो। वह उनके लेखन को प्रेरित करेगा ताकि वे जो शब्द लिखें वे मानवीय शब्दों में परमेश्वर के ही शब्द हों।

आत्मा के दिव्य गुण सबसे पहले उसके नाम में दिखते हैं। मुझे इसे और ज़ोरदार बनाना चाहिए था। वह सत्य की आत्मा है।

इसके अलावा, वह पवित्र आत्मा है। हम इसे बहुत हल्के में लेते हैं। हर बार जब हम उसका पूरा नाम इस्तेमाल करते हैं, तो वास्तव में, उसका पूरा नाम केवल इफिसियों 4.30 में दिया गया है। यह सिर्फ तीसरी बार है जब हम वहाँ गए हैं।

परमेश्वर की पवित्र आत्मा को दुखी मत करो। पवित्रशास्त्र में केवल एक ही स्थान है जहाँ पूर्ण पदनाम दिया गया है। परमेश्वर की पवित्र आत्मा को दुखी मत करो जिसके द्वारा तुम पर मुहर लगाई गई थी।

यह वह होना चाहिए जिसके साथ आपको पिता द्वारा छुटकारे के दिन के लिए मुहरबंद किया गया था। पवित्र आत्मा, उसका नाम, उसे परमेश्वर की पवित्रता से जोड़ता है, जिस तरह से परमेश्वर के लिए ही उचित है। हम संत हैं।

आश्चर्यजनक रूप से, कोरिंथियन ईसाई जो इतने सारे तरीकों से इतने मिश्रित हैं, वे परमेश्वर के संत हैं। यह हमें 1 कुरिन्थियों 1 के पहले कुछ छंदों में बताया गया है। मसीह यीशु में पवित्र। यह अविश्वसनीय है।

अगर कुरिन्थ के लोग संत हैं तो हम सभी के लिए आशा है। लेकिन पवित्र आत्मा कोई संत नहीं है। वह परमेश्वर है।

उसका नाम ही पवित्र आत्मा है। वह जहाँ भी जाता है, उसका नाम ही परमेश्वर का गुण दर्शाता है। आत्मा में दिव्य गुण होते हैं।

उनके नाम, सत्य की आत्मा और पवित्र आत्मा, उनके ईश्वरत्व को दर्शाते हैं क्योंकि उनमें सत्यता या सत्यनिष्ठा का दिव्य गुण है, और पवित्रता का दिव्य गुण उनके नाम का हिस्सा है और उनकी सेवकाई का हिस्सा है। जैसा कि हम बाद में देखेंगे, वह शुरू में, धीरे-धीरे और अंत में पवित्रता करते हैं। उनके पास दिव्य गुण या विशेषताएँ भी हैं।

ईश्वरीय शक्ति आत्मा से जुड़ी हुई है। रोमियों 15:19. इसलिए पौलुस अपनी सेवकाई के बारे में इन शब्दों में बात कर सकता था।

रोमियों 15:18. क्योंकि मैं किसी और बात के विषय में कहने का साहस नहीं करूंगा, केवल उन बातों के विषय में जो मसीह ने मेरे द्वारा अन्यजातियों को वचन और कर्म से, चिन्हों और अद्भुत कामों की सामर्थ से, और परमेश्वर की आत्मा की सामर्थ से आज्ञाकारी बनाने के लिये पूरी की हैं, यहां तक कि यरूशलेम से लेकर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार की सेवकाई को पूरा किया है। पौलुस परमेश्वर की आत्मा की सामर्थ से सेवकाई करता है।

पौलुस केवल मानवीय शक्ति से ही सेवा नहीं करता, बल्कि ईश्वरीय शक्ति से भी सेवा करता है। पवित्र आत्मा में ईश्वर की शक्ति का दिव्य गुण है। जैसा कि हमने देखा, उसके पास ईश्वरीय ज्ञान है।

1 कुरिन्थियों 2:10. मनुष्य के मन की बात कोई नहीं जानता, केवल मनुष्य की आत्मा। यदि कोई अपने गहरे रहस्यों को किसी से साझा नहीं करता, तो वह उन्हें अपने तक ही रखता है।

यदि वे उन्हें साझा करते हैं, तो वे दूसरों को ज्ञात हो जाते हैं। कोई भी मनुष्य के विचारों को नहीं जानता, सिवाय उस पुरुष या स्त्री की आत्मा के जो उनमें है, क्योंकि आत्मा सब कुछ खोजती है, यहाँ तक कि गहरी बातें, अर्थात् परमेश्वर की गहरी बातें भी।

परमेश्वर के विचारों को परमेश्वर की आत्मा के अलावा कोई नहीं समझ सकता। यह कहना कि प्रेरित पौलुस के अलावा कोई भी परमेश्वर के विचारों को नहीं जानता, इसका क्या मतलब है? मुझे ऐसा नहीं लगता। या स्वर्गदूत माइकल के अलावा कोई नहीं जानता? नहीं, यह काम नहीं करता।

नहीं, केवल परमेश्वर ही परमेश्वर के विचारों को जानता है, और परमेश्वर एक है। हम व्यक्तियों को अलग नहीं करते, बल्कि हम उन्हें अलग करते हैं। और यहाँ, आत्मा पिता के विचारों को जानता है, और वह प्रेरितों के उपदेश के माध्यम से उन विचारों को प्रकट करता है।

इसलिए वे परमेश्वर के वचनों को बोलते हैं, जो उन्हें आत्मा द्वारा सिखाए गए हैं। इब्रानियों 9:14, मेरे अनुमान में, थोड़ा मतभेद वाला है, लेकिन मुझे लगता है कि आम सहमति है, मुझे पता है कि आम सहमति है, और मुझे लगता है कि यह सही है। इब्रानियों 9:14 आत्मा को अनंत काल का श्रेय देता है।

हम व्यक्तियों को भ्रमित नहीं करते। केवल परमेश्वर का शाश्वत पुत्र ही मनुष्य बना, न पिता, न आत्मा। केवल पुत्र ने ही पृथ्वी पर पाप रहित जीवन जिया, न पिता, न आत्मा।

केवल पुत्र ही क्रूस पर मरा और जी उठा, न पिता, न आत्मा। फिर भी, हम व्यक्तियों को भ्रमित नहीं करते, लेकिन हम व्यक्तियों को अलग भी नहीं करते। इसलिए मसीह का क्रूस कार्य, जो विशिष्ट रूप से उसका कार्य है, को भी पवित्रशास्त्र में पिता और आत्मा के कार्य के रूप में संदर्भित किया जाता है।

इसलिए 2 कुरिन्थियों 5 में, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर मसीह में था, और संसार को अपने साथ मिला रहा था। यह आयत 18 या 19 के आसपास है, ठीक वही के आसपास। और पूरे पवित्रशास्त्र में, एक जगह, मसीह के प्रायश्चित को आत्मा के कार्य के संबंध में बोला गया है, और वह है इब्रानियों 9:14।

क्योंकि यदि बकरों और बैलों का लहू, इब्रानियों 9:13, और अशुद्ध लोगों पर बछिया की राख छिड़कने से शरीर की शुद्धि होती है, तो मसीह का लहू, जिसने सनातन आत्मा के द्वारा अपने आप को परमेश्वर को निर्दोष चढ़ाया, हमारे विवेक को मरे हुए कामों से कितना अधिक शुद्ध करेगा ताकि हम जीवते परमेश्वर की सेवा करें। फिलिप एजकॉम्बे ह्यूजेस, जिनके लिए मेरे मन में बहुत सम्मान है, अब प्रभु के पास हैं। उन्होंने एक अद्भुत हिब्रू टिप्पणी लिखी। यह वास्तव में यीशु के संदर्भ में बहुत अच्छा है, लेकिन उपदेशों के लिए भी।

बात बस इतनी है कि वह वाक्पटु है। और वह एक अच्छा विद्वान होने के साथ-साथ भगवान से भी प्रेम करता था। लेकिन मैं उससे असहमत हूँ।

वह यहाँ शाश्वत आत्मा को यीशु के दिव्य स्वभाव के संदर्भ के रूप में देखता है। यह सर्वसम्पत्ति नहीं है। और सबसे महत्वपूर्ण बात, मुझे लगता है कि यह उतना भी फिट नहीं बैठता।

मसीह का लहू, जिसने अनन्त पवित्र आत्मा के द्वारा अपने आप को निर्दोष रूप से परमेश्वर को अर्पित किया, कितना अधिक होगा? मैं आपको विलियम लेन की दो-खंडीय बाइबिल संबंधी उत्कृष्ट टिप्पणी का संदर्भ देता हूँ, जहाँ वह दिखाता है कि अकेले यह दर्शाता है कि प्रायश्चित, निश्चित रूप से, यीशु द्वारा किया गया था, लेकिन पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से, और इस प्रकार बलिदान पूर्ण, पूर्ण है, जो पुराने नियम के सभी बलिदानों को अप्रचलित बनाता है। और नौ के रूप में, अगली ही आयत दिखाती है, यहाँ तक कि यीशु के मरने से पहले पुराने नियम के बलिदानों को भी प्रभावकारी बनाना। यह एक अविश्वसनीय बलिदान है।

इसलिए, हम व्यक्तियों को भ्रमित नहीं करते हैं और पिता या आत्मा को क्रूस पर नहीं रखते हैं। फिर भी, वे अविभाज्य हैं। क्रूस पर पुत्र के कार्य में, यह कहा जा सकता है कि उस कार्य में, परमेश्वर संसार को अपने साथ मिला रहा था।

2 कुरिन्थियों 5:19. और यह कहा जा सकता है कि मसीह ने खुद को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर को बलिदान के रूप में अर्पित किया। इब्रानियों 9:14.

इस प्रकार, आत्मा शाश्वत है। अनंत काल के दिव्य गुण को आत्मा के साथ-साथ ज्ञान के दिव्य गुणों, 1 कुरिन्थियों 2:10, और शक्ति, रोमियों 15:19 में वर्णित किया गया है। आत्मा दिव्य कार्य करता है।

गुणों के साथ-साथ, यह एक न्याय-वाक्य है। कुछ ऐसे कार्य हैं जो केवल परमेश्वर ही करता है। शास्त्र इन कार्यों को पवित्र आत्मा को बताता है।

इसलिए, आत्मा परमेश्वर है। वह न तो परमेश्वर पिता है और न ही परमेश्वर पुत्र। वह परमेश्वर पवित्र आत्मा है।

आत्मा सृष्टि के निर्माण में शामिल है, उत्पत्ति 1:1 और 2। शुरुआत में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया। पृथ्वी बेढंगी और सुनसान थी, और अंधकार गहरे सागर के ऊपर था। और परमेश्वर की आत्मा जल के ऊपर मँडरा रही थी।

यहाँ, पवित्रशास्त्र आत्मा के बारे में एक पक्षी की छवि के साथ बात करता है, जो यीशु के बपतिस्मा के समय कबूतर की तरह उतरते हुए पवित्र आत्मा के समान है। आत्मा पानी के ऊपर मंडराते हुए एक पक्षी की तरह है। अर्थात्, आत्मा सृष्टि के कार्य को पूरा करता है और उसमें भाग लेता है।

यूहन्ना 1, कुलुस्सियों 1, और इब्रानियों 1 में नया नियम दिखाता है कि पुत्र का भी एक हिस्सा है। इसलिए, हम कहेंगे कि पिता सृष्टि करता है, और उसके प्रतिनिधि पुत्र और पवित्र आत्मा हैं। फिर से, पवित्रशास्त्र में यह प्रथा है कि इस संबंध में पुत्र की तुलना में आत्मा के बारे में कम बताया जाता है।

और वास्तव में, यह अंश है। मैं इसके बारे में थोड़ा और विस्तार से बताऊंगा, जैसा कि मैं नीचे देख रहा हूँ, थोड़ी देर में। तो, यह इस बिंदु पर एक त्वरित सारांश है।

इसी तरह, पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र का निर्माण करने का दिव्य कार्य करता है, 2 पतरस 1:20 और 21। हमें बताइए, चूँकि पतरस भविष्यवाणी के बारे में बात कर रहा था, इसलिए वह कहता है कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी की अपनी व्याख्या से नहीं आई है। क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी कभी भी मनुष्य की इच्छा से नहीं हुई।

अर्थ तो अकेला ही है। लेकिन मनुष्य ईश्वर की ओर से बोलते थे। मनुष्य मूसा या डेविड, जॉन या पॉल की शैली में बोलते थे।

उनकी शैली विशिष्ट है। पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होकर मनुष्य परमेश्वर की ओर से बोलते थे। पवित्र आत्मा ने पवित्र शास्त्र के निर्माण में भूमिका निभाई।

क्या मनुष्यों ने कोई भूमिका नहीं निभाई? बेशक, उन्होंने एक भूमिका निभाई। लेकिन परमेश्वर ने उनकी भूमिका को इस तरह से नियंत्रित किया कि उसने अपना वचन, अपना बहुत ही दोषरहित वचन, अमानवीय वचन प्रस्तुत किया। आइए पवित्रशास्त्र की प्रेरणा के सिद्धांत को अनुग्रह के सिद्धांत के एक उपसमूह के रूप में देखें।

परमेश्वर हमसे मानवीय भाषा में बात करता है क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है और चाहता है कि हम सुसमाचार और उससे भी अधिक को समझें। रोमियों 1:4 के अनुसार, यीशु द्वारा किया जाने वाला एक और दिव्य कार्य परमेश्वर के पुत्र को मृतकों में से जीवित करना है। आमतौर पर, पवित्रशास्त्र में, पिता पुत्र को जीवित करता है, या तो सीधे कथनों के द्वारा या जिसे हम दिव्य निष्क्रिय कहते हैं जब यह कहता है कि मसीह मृतकों में से जीवित हो गया था।

यह पिता के नाम से बचने का एक तरीका है। फिर भी, यह पिता को दर्शाता है। शास्त्र में केवल दो बार, जॉन 2 में, इस मंदिर को नष्ट कर दो, और तीन दिनों में, मैं इसे खड़ा कर दूंगा।

और यूहन्ना 10 में, मेरे पास अपना जीवन देने की शक्ति है; मैं इसे फिर से लेता हूँ। पवित्रशास्त्र में केवल दो बार, केवल यूहन्ना के सुसमाचार में, पुत्र स्वयं को जीवित करता है। लेकिन कुछ बार, पवित्र आत्मा इस कार्य में शामिल होता है।

रोमियों 1 के साथ भी ऐसा ही है। पौलुस, मसीह यीशु का सेवक, जिसे प्रेरित होने के लिए बुलाया गया, परमेश्वर के सुसमाचार के लिए अलग रखा गया, जिसकी उसने भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र शास्त्रों के माध्यम से अपने पुत्र के बारे में पहले से ही प्रतिज्ञा की थी, जो शरीर के अनुसार दाऊद का वंशज था। वह एक मनुष्य है और उसे परमेश्वर का पुत्र घोषित किया गया, अर्थात्, एक दिव्य मनुष्य, पवित्रता की आत्मा के अनुसार शक्ति में, मृतकों में से उसके पुनरुत्थान द्वारा, यीशु मसीह, हमारा प्रभु। आमतौर पर, पिता पुत्र को जीवित करता है। यूहन्ना, अध्याय 2 और 10 में दो बार, पुत्र खुद को जीवित करता है।

लेकिन साथ ही, कुछ बार, आत्मा पुत्र को मृतकों में से जीवित करने में सक्रिय है। यह एक अनोखा कार्य है, जो केवल पिता, पुत्र या पवित्र आत्मा द्वारा ही किया जा सकता है। इसके अलावा, आत्मा की मुख्य भूमिका उद्धार को लागू करना है।

पिता चुनता है, जैसा कि हमने पिछले व्याख्यान की शुरुआत में देखा, पुत्र छुड़ाता है, और इस क्रूस और पुनरुत्थान में, आत्मा उद्धार लागू करता है। इसलिए वह लोगों को यीशु से जोड़ता है। 1 कुरिन्थियों 12:13.

क्योंकि एक आत्मा में, हम सभी को एक शरीर में बपतिस्मा दिया गया था, यहूदी या यूनानी, दास या स्वतंत्र, और सभी को एक आत्मा पिलाई गई थी। पॉल दो अलग-अलग छवियों का उपयोग करता है, एक तरल पीना या ईसाई बपतिस्मा, और आत्मा के मसीह के साथ एकता में शामिल होने की बात करता है। मसीह के साथ एकता एक व्यक्तिगत उद्धार सिद्धांत है।

कुछ लोग मानते हैं कि वे उद्धार के लिए यीशु से जुड़े हैं, लेकिन तुरंत ही, वे उन सभी लोगों से जुड़ जाते हैं जो उद्धार में यीशु से जुड़े हैं। इसलिए, पॉल लिखते हैं, एक आत्मा में, या आप एक आत्मा से अनुवाद कर सकते हैं, हम सभी को एक शरीर में बपतिस्मा दिया गया था। आत्मा है, उद्धार लागू करता है।

उद्धार में आत्मा का मुख्य कार्य हमें परमेश्वर के पुत्र और उसके सभी उद्धारक लाभों से जोड़ना है। रोमियों 8:15 में आत्मा हमें अब्बा, पिता कहकर पुकारने में सक्षम बनाती है। अब्बा बच्चों जैसी भाषा नहीं है, और इसका मतलब दादा नहीं है।

इसका मतलब है पिता। यह एक बच्चे का शब्द है। यह एक बच्चे का अपने पिता के प्रति संबोधन है, जो एक है, यह प्यार और सम्मान का शब्द है।

मैंने एक बार क्लास में कहा था कि यह दादा या डैडी जैसी बच्चों वाली बात नहीं है। और एक शादीशुदा औरत जिसके बच्चे हैं, उसने कहा, तुम्हारा क्या मतलब है? मैं अपने डैडी को डैडी कहती हूँ। यह खूबसूरत था।

इसका मतलब यह है कि बड़े हो चुके बच्चे अभी भी अपने पिता को पॉप या डैड या डैडी या जो भी हो, कहकर बुलाते हैं। इसका बिल्कुल यही मतलब है। और जब वे छोटे बच्चे थे, तब भी वे यही अभिव्यक्ति इस्तेमाल कर सकते थे।

यह बच्चों जैसी बात नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर के प्रति एक गर्मजोशी भरा, स्नेही, सम्मानजनक संबोधन है। खैर, रोमियों 8:15 में पौलुस कहता है, तुम्हें दासता की आत्मा नहीं मिली कि फिर से डर जाए, बल्कि तुम्हें पुत्रों के रूप में गोद लेने की आत्मा मिली है जिसके द्वारा हम पुकारते हैं, अब्बा, हे पिता। आत्मा हमें परमेश्वर को, अब्बा, हे पिता कहने में सक्षम बनाती है।

वह हमें परमेश्वर के पुत्र को हमारे उद्धारक के रूप में मानने में सक्षम बनाता है ताकि हम बन सकें, पिता हमें वयस्क बच्चों के सभी अधिकारों, विशेषाधिकारों और जिम्मेदारियों के साथ अपने परिवार में रखता है। इसलिए, आत्मा गोद लेने में सक्रिय है।

वह पुनर्जन्म में सक्रिय है। तीतुस 3:5 इस बारे में बात करता है। जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की भलाई और प्रेमपूर्ण दया प्रकट हुई, तीतुस 3:4, उसने हमें बचाया, हमारे द्वारा धार्मिकता में किए गए कार्यों के कारण नहीं, बल्कि अपनी दया के अनुसार, पुनर्जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के नवीनीकरण के द्वारा, जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के माध्यम से हम पर भरपूर मात्रा में उंडेला। आत्मा नवीनीकरण करता है।

वह पुनर्जन्म लेता है। जैसा कि हम यूहन्ना 3:8 में देखते हैं, हवा जहाँ चाहे वहाँ चलती है। हम यह नहीं देख सकते कि वह कहाँ से आती है या कहाँ जा रही है।

हर कोई ऐसा ही है, जॉन ऑफ द स्पिरिट, पवित्र आत्मा का संदर्भ, जॉन 3:8। आत्मा उद्धार लागू करती है। आत्मा लोगों को फिर से जन्म लेने का कारण बनती है। स्वर्गदूत या प्रेरित ऐसा नहीं करते।

केवल परमेश्वर ही ऐसा करता है। आत्मा ही परमेश्वर है। आत्मा ही पवित्र करनेवाला है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों को पवित्र करता है। 2 थिस्सलुनीकियों 2:13. हे भाइयो, जो प्रभु के प्रिय हैं, हमें तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें आत्मा के द्वारा पवित्र बन कर, और सत्य पर विश्वास करके उद्धार पाने के लिये प्रथम फल होने के लिये चुन लिया है।

आत्मा विश्वासियों को शुरू में, धीरे-धीरे और अंत में पवित्र करती है। क्योंकि यहाँ आत्मा द्वारा यह पवित्रीकरण सत्य में विश्वास के साथ जुड़ा हुआ है, इसलिए मैं इसे प्रारंभिक पवित्रीकरण मानता हूँ। परमेश्वर ने आपको प्रथम फल के रूप में चुना है।

प्रथम फल के रूप में हो सकता है, ईएसवी, शुरू से ही हो सकता है। केवल एक ग्रीक अक्षर का अंतर है और शब्दों को एक साथ रखा गया है।

यह या तो अपरेक्सेस है, जो शुरू से है, या अपरेक्से, जो कि प्रथम फल है। एनआईवी कहता है कि शुरू से। ईएसवी कहता है कि प्रथम फल। एक धर्मशास्त्री के रूप में, वे दोनों सत्य हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि वे दोनों सही अनुवाद हैं। ऐसा नहीं हो सकता। लेकिन यह सत्य का मामला नहीं है। यह व्याख्या का मामला है और इस मामले में, पाठ्य आलोचना का। मैं अपने उद्देश्यों के लिए ईएसवी के साथ जाऊँगा।

लेकिन यह सच है कि परमेश्वर ने हमें शुरू से ही चुना है। हालाँकि, शायद यह ऐसा नहीं कहता। परमेश्वर ने आपको आत्मा द्वारा पवित्रीकरण और सत्य में विश्वास के माध्यम से उद्धार पाने के लिए पहले फल के रूप में चुना है।

आत्मा पवित्र करता है। वह परमेश्वर के लोगों को हमेशा के लिए अलग कर देता है, जब सुसमाचार का प्रचार किया जाता है और वे विश्वास करते हैं। पवित्रीकरण परमेश्वर का कार्य है।

यहाँ, यह आत्मा का कार्य है। इसलिए, आत्मा परमेश्वर है। और इसी तरह, औचित्य, हालाँकि यह आम तौर पर ज्ञात नहीं है, यह भी आत्मा का कार्य है।

1 कुरिन्थियों 6 में, पौलुस ने कुरिन्थियों की उद्धार से पहले की कुछ पापपूर्ण जीवन-शैली का पूर्वाभ्यास किया। और वह आनन्दित होता है जब वह कहता है, और तुम में से कुछ ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर की आत्मा से धोए गए, पवित्र किए गए, धर्मी ठहराए गए। तीन क्रियाएँ, सभी भूतकाल में और सभी निष्क्रिय आवाज़ में, विश्वासियों के लिए कुछ किया गया, अतीत में उनके लिए कुछ किया गया।

उन्हें धोया गया था, शायद ईसाई बपतिस्मा का संदर्भ। मुझे ऐसा लगता है। आप पवित्र किए गए थे, भूतकाल।

आप प्रभु यीशु मसीह के नाम पर और हमारे परमेश्वर की आत्मा के द्वारा धर्मी ठहराए गए। वे दो पूर्वसर्गीय वाक्यांश निश्चित रूप से तीन क्रियाओं में से अंतिम के साथ चलते हैं, औचित्य और औचित्य। मुझे लगता है कि वे तीनों के साथ चलते हैं।

अगर यह सही है, तो पवित्रीकरण भी, मुझे खेद है, यहाँ औचित्य का कार्य है। पवित्रीकरण आत्मा का कार्य है, इसमें कोई संदेह नहीं है। शायद वे दो पूर्वसर्ग वाक्यांश तीनों क्रियाओं के साथ चलते हैं, लेकिन मुझे यकीन है कि वे अंतिम क्रिया के साथ चलते हैं।

और यही मेरा मुद्दा है, क्षमा करें। आप प्रभु यीशु मसीह के नाम पर और हमारे परमेश्वर की आत्मा के द्वारा धर्मी ठहराए गए। पवित्र आत्मा धर्मी ठहराने में सक्रिय है।

वह क्या भूमिका निभाता है? ठीक है, अगर आप मुझे बताएं कि इसका क्या मतलब है कि हम मसीह के नाम पर न्यायसंगत हैं, तो मुझे लगता है कि मैं आपको बता सकता हूँ कि आत्मा की भूमिका क्या है। हम मसीह के नाम पर न्यायसंगत हैं। हम मसीह के नाम पर विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा न्यायसंगत हैं।

मेरा मानना है कि यह विश्वास का संदर्भ है। आप प्रभु यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करके धर्मी ठहराए गए, और यह हमारे परमेश्वर की आत्मा के द्वारा है। अर्थात्, आत्मा उद्धार करने वाले विश्वास का उपहार देती है।

औचित्य केवल अनुग्रह से, केवल विश्वास के द्वारा, केवल मसीह में है। और जैसा कि अन्य अंशों में है, कोई भी यह नहीं कह सकता कि यीशु प्रभु है, सिवाय परमेश्वर की आत्मा के। बेशक, कोई भी ऐसा कह सकता है।

पॉल का मतलब है कि कोई भी ऐसा नहीं कह सकता और इसका मतलब भी नहीं निकाल सकता। कोई भी व्यक्ति यीशु के आधिपत्य के बारे में उस आदिम ईसाई स्वीकारोक्ति को ईमानदारी से नहीं कह सकता, न ही कर सकता है, जब तक कि पवित्र आत्मा उन्हें ऐसा करने में सक्षम न करे। दूसरे शब्दों में, औचित्य भी हमारे परमेश्वर की आत्मा द्वारा है।

आत्मा उद्धार को उसके सभी आयामों में लागू करती है। मिलन, दत्तक ग्रहण, पुनर्जन्म, पवित्रीकरण, औचित्य। आत्मा उद्धार के लिए बहुत कुछ है, बहुत ज़रूरी है।

वह उद्धार की इतनी अनिवार्य शर्त है कि रोमियों 8:9 में यह कहा जा सकता है। रोमियों 8:9 में कहा जा सकता है कि जिस किसी में मसीह की आत्मा नहीं है, वह उसका नहीं है। यह एक समीकरण है।

आत्मा के बिना उद्धार नहीं होता, रोमियों 8:9। आत्मा उद्धार के लिए कितनी आवश्यक है। वास्तव में, मसीह से संबंधित होने का संदर्भ उसके साथ एकता की बात करता है, और हम बाद में भी उस पर वापस आएं। हम आत्मा के ईश्वरत्व को दिखा रहे हैं।

हमने उनके व्यक्तित्व को दिखाया है, अब उनके देवतात्व को भी। केवल ईश्वर ही अपने लोगों में निवास करता है। मनुष्यों के दूसरे मनुष्यों में निवास करने या स्वर्गदूतों के मनुष्यों में निवास करने की कोई धारणा नहीं है।

ये बेतुकी बातें हैं। यीशु ने भविष्यवाणी की है, जैसा कि हम यूहन्ना 14:16 और 17 में दो बार देख चुके हैं, कि आत्मा हमारे अंदर वास करेगी। आप उसे जान लेंगे।

वह तुम्हारे साथ रहेगा। वह तुम्हारे अन्दर रहेगा। मैं फिर कभी नहीं मुड़ने वाला। यूहन्ना 14:16 और 17। केवल परमेश्वर ही अपने लोगों में वास करता है। आत्मा हमारे अन्दर वास करेगी।

इसलिए, आत्मा ही परमेश्वर है। पॉल कहते हैं कि पवित्र आत्मा हमारे अंदर वास करती है। चूँकि परमेश्वर एक है और व्यक्ति अविभाज्य हैं, भले ही शास्त्र ने ऐसा न कहा हो, मैं कहूँगा कि शास्त्र कभी ऐसा नहीं कहता, लेकिन हम पिता और पुत्र द्वारा भी वास करते हैं।

लेकिन छह बार, शास्त्र कहता है कि पुत्र हमारे अंदर रहता है, और दो बार पिता हमारे अंदर रहता है। लेकिन आम तौर पर, यह कहता है कि आत्मा हमारे अंदर रहती है। रोमियों 8:9. तुम शरीर में नहीं बल्कि आत्मा में हो, अगर वास्तव में, परमेश्वर की आत्मा तुम में रहती है।

रोमियों 8 की आयत 11. यदि यीशु को मरे हुआओं में से जिलाने वाले का आत्मा तुम में बसा हुआ है, तो जिसने मसीह यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया, वह तुम्हारे नश्वर शरीरों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जीवन देगा। आत्मा अभी हमारे अंदर बसती है। और यह एक जगह है जो सिखाती है कि आत्मा अंतिम दिन मृतकों में से हमारे पुनरुत्थान में शामिल होने जा रही है।

ये ईश्वरीय कार्य हैं। हमें कौन उठाता है, सिवाय परमेश्वर के? 1 कुरिन्थियों 3:16. कलीसिया सामूहिक रूप से आत्मा से वास करती है।

1 कुरिन्थियों 6:19. विश्वासियों में व्यक्तिगत रूप से आत्मा वास करती है। 1 कुरिन्थियों 3:16.

क्या तुम नहीं जानते कि तुम, बहुवचन, परमेश्वर के मंदिर हो और परमेश्वर की आत्मा तुम में वास करती है, बहुवचन? यदि कोई परमेश्वर के मंदिर को नष्ट करता है, तो परमेश्वर उसे नष्ट कर देगा।

क्योंकि परमेश्वर का मंदिर पवित्र है, और तुम वह मंदिर हो। शास्त्रों में, मंदिरों में देवताओं का वास होता है, अगर मैं ऐसा बोल सकता हूँ, तो ठीक है? और वास्तव में, सच्चा और जीवित परमेश्वर तम्बू में वास करता है और फिर पहला और वास करने वाला परमेश्वर परमेश्वर के लोगों के मंदिर में वास करता है, बहुवचन, और वह वास करने वाला परमेश्वर परमेश्वर, पवित्र आत्मा है।

6:19 में यौन अनैतिकता का संदर्भ है, और इसलिए यह मनुष्य है, व्यक्तिगत शरीर है जो आत्मा द्वारा वास करते हैं। यौन अनैतिकता से दूर भागो, 1 कुरिन्थियों 6 18। पाप का हर दूसरा व्यक्ति, हर दूसरा पाप जो एक व्यक्ति करता है, हर दूसरा व्यक्ति पाप करता है, हाँ, हर दूसरा पाप जो एक व्यक्ति करता है वह शरीर के बाहर है, लेकिन यौन अनैतिक व्यक्ति अपने शरीर के खिलाफ पाप करता है।

क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है जो तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है? तुम अपने नहीं हो। क्योंकि तुम दाम देकर खरीदे गए हो। इसलिए अपने शरीर के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।

हमारे भीतर का पवित्र आत्मा हमारे शरीरों को व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर का मंदिर बनाता है। 2 कुरिन्थियों 1:21, 22. पौलुस पर यह आरोप लगाया गया कि वह अपनी यात्रा का कार्यक्रम बदलने में ढिलाई बरत रहा था और दूसरी बार भी कुरिन्थ नहीं आया।

उसके दुश्मन इस पर क्रोध पड़े। ओह, वह अपना कार्यक्रम बदलता है, जिस तरह से वह अपने मोज़े बदलता है, उफ़, मैंने मोज़े के बारे में हिस्सा बनाया, जिस तरह से वह अपना मन बदलता है, वह, और उसका सुसमाचार, उसका संदेश, वह, वह पूरी तरह से एक ढुलमुल है। पॉल व्यक्तिगत अपमान को संभाल सकता है, लेकिन सुसमाचार, आप सुसमाचार की आलोचना नहीं कर सकते। पॉल बाहर आता है।

2 कुरिन्थियों 1:20. परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाएँ यीशु में ही हाँ के रूप में पाई जाती हैं। इसलिए हम उसके द्वारा ही परमेश्वर की महिमा के लिए उसके सामने आमीन कहते हैं।

यह परमेश्वर ही है जो हमें स्थापित करता है; वह हमें मसीह में तुम्हारे साथ दृढ़ बनाता है। बेशक, सब कुछ मसीह के साथ एकता में है। उसने हमें अभिषिक्त किया है, हम पर अपनी मुहर लगाई है, और हमें गारंटी के रूप में अपने आत्मा को हमारे दिलों में दिया है। मैं एक ढुलमुल व्यक्ति नहीं हूँ, पॉल कहते हैं, मेरा संदेश तीर की तरह सीधा है। यह एक संदेश है जिसका प्रचार यीशु ने किया, और जो यीशु के बारे में प्रचार किया जाता है, और यह एक संदेश है जिसे पवित्र आत्मा हमारे दिलों में पुष्ट करता है।

हम परमेश्वर की आत्मा से भरे हुए हैं, और अंत में, 2 तीमुथियुस 1:14। वही सत्य दिया गया है, हम परमेश्वर से भरे हुए हैं, मुख्य रूप से हम पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं, इसलिए आत्मा केवल एक व्यक्ति नहीं है, वह एक दिव्य व्यक्ति है। हमारे भीतर रहने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा, पौलुस अपने शिष्य को लिखता है कि तुम्हें सौपी गई अच्छी जमा राशि की रक्षा करो।

आत्मा ईश्वरीय है। केवल परमेश्वर ही अपने लोगों में वास करता है; आत्मा ही वह कार्य करता है; इसलिए, आत्मा ही परमेश्वर है। जैसा कि हमने प्रेरितों के काम 5:3 और 4 में देखा, आत्मा का नाम परमेश्वर के नाम के साथ बदल दिया गया है।

हनन्याह, तुमने पवित्र आत्मा से झूठ बोला। सुनिश्चित करो कि मैं अपनी सारी बातें सही से रखूँ। तुमने पवित्र आत्मा से झूठ बोला है, पद 3। पद 4, तुमने मनुष्य से नहीं बल्कि परमेश्वर से झूठ बोला है।

पवित्र आत्मा का नाम परमेश्वर के नाम के साथ बदल दिया गया है, और जैसा कि हमने देखा, परमेश्वर के मंदिर के बारे में 1 कुरिन्थियों 3:16 में सामूहिक रूप से बात की गई है, और पवित्र आत्मा के मंदिर के बारे में 1 कुरिन्थियों 6:19 में व्यक्तिगत रूप से बात की गई है। परमेश्वर का मंदिर, पवित्र आत्मा का मंदिर, और आत्मा का नाम परमेश्वर के साथ एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जाता है, इस तरह से कि या तो प्रेरित लापरवाह है, जो वह नहीं है, या वह यह संकेत दे रहा है कि आत्मा स्वयं परमेश्वर है। अंत में, आत्मा परमेश्वर है, न केवल इसलिए कि उसके पास दिव्य गुण हैं और वह दिव्य कार्य करता है और उसका नाम परमेश्वर के नाम के साथ बदल सकता है, बल्कि आत्मा पिता और पुत्र के साथ उन तरीकों से जुड़ी हुई है, जिनमें केवल आत्मा, परमेश्वर, जुड़ा हुआ है।

मत्ती 28:19 और 20 में महान आदेश में, हम पढ़ते हैं, यीशु कहते हैं, "इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ। और देखो, मैं युग के अंत तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। सबसे पहले, आत्मा एक व्यक्ति है, कोई शक्ति नहीं।

यह कैसे काम करता है? उन्हें पिता और पुत्र तथा शक्ति के नाम पर बपतिस्मा देना। यह स्टार वार्स धर्मशास्त्र के लिए काम कर सकता है, जो वास्तव में पारसी धर्म है, जो एक ऑन्टोलॉजिकल द्वैतवाद है। शक्ति का एक अंधेरा और एक उजला पक्ष है।

यह बाइबल की शिक्षा नहीं है। हे भगवान। नहीं, परमेश्वर का कोई अंधकारमय पक्ष नहीं है, जो शाश्वत है और जो एक है।

इस तरह से परमेश्वर में कोई द्वैत नहीं है। वह एक परमेश्वर है, जो तीन व्यक्तियों में अनंत काल तक विद्यमान रहता है। और इसके बारे में क्या? पिता, पुत्र और सृष्टि के नाम पर या पौलुस के नाम पर बपतिस्मा देना।

1 कुरिन्थियों 1 में, पॉल कहता है, "तुम मेरे नाम पर बपतिस्मा नहीं लिए गए। पिता, पुत्र, प्रधान स्वर्गदूत और स्वर्गदूत गेब्रियल के नाम पर बपतिस्मा लो। नहीं, जब मैं यह कहता हूँ तो मैं अनादर करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ।

मैं यह प्रदर्शित कर रहा हूँ कि यह स्थान केवल एक व्यक्ति द्वारा ही नहीं, बल्कि एक दिव्य व्यक्ति द्वारा भी लिया गया है। उन्हें परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा के नाम से

बपतिस्मा देना ही अर्थ है। अर्थात्, आत्मा का नाम पिता और पुत्र के साथ जुड़ा हुआ है, क्योंकि केवल परमेश्वर का नाम ही इसके साथ जुड़ा हो सकता है।

1 कुरिन्थियों 12 में आध्यात्मिक उपहारों के लिए भी यही बात लागू होती है। पौलुस यहाँ त्रिएकता को होते हुए देखता है। वह उपहारों और सेवकाईयों और फिर उन सेवकाईयों के परिणामों के बारे में बात करता है।

और वह उन तीन चीज़ों को क्रमशः तीन त्रित्ववादी व्यक्तियों के साथ जोड़ता है। आत्मा उपहार देता है। उपहारों का उपयोग पुत्र की सेवा में किया जाता है।

और पिता उपहारों और सेवा के माध्यम से परिणाम उत्पन्न करने के लिए कार्य करता है। 1 कुरिन्थियों 12:4 से 6, इस विभाजित मण्डली में एकता को बढ़ावा देने की कोशिश कर रहा है। अब, उपहारों की विविधता है, लेकिन आत्मा एक ही है।

सेवा के विभिन्न प्रकार हैं, लेकिन वे सभी एक ही हैं: प्रभु यीशु। गतिविधियाँ विभिन्न प्रकार की हैं, लेकिन यह वही परमेश्वर है जो सभी को सशक्त बनाता है। ओह, विभिन्न उपहार हैं, लेकिन आत्मा उन सभी को देता है।

प्रभु यीशु मसीह की सेवा करने के अलग-अलग तरीके और अलग-अलग मंत्रालय हैं, लेकिन वे सभी मसीह की सेवा कर रहे हैं। और अलग-अलग परिणाम हैं, लेकिन यह परमेश्वर, पिता है, जो उन सभी को सशक्त बनाता है। फिर से, हम पाते हैं कि आत्मा का नाम पिता और पुत्र के साथ एक तरह से जुड़ा हुआ है जो केवल परमेश्वर के लिए उपयुक्त है।

एक प्रेरित उपहार देता है, और एक स्वर्गदूत उपहार देता है। नहीं, नहीं, नहीं। परमेश्वर उपहार देता है।

आत्मा ही ईश्वर है। और हमने उस महान पॉलिन आशीर्वाद को देखा। प्रभु यीशु मसीह की कृपा, ईश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की संगति आप सभी के साथ रहे।

मसीह अनुग्रह देता है। पिता प्रेम देता है। और आत्मा संगति देता है, हमारे साथ संगति में प्रवेश करता है।

वे ईश्वरीय व्यक्ति हैं जो क्षमा किये गये व्यक्तियों, मानवीय व्यक्तियों के साथ संगति करते हैं। जिस तरह से उन आशीर्षों में, उस आशीर्वाद में आत्मा का नाम पिता और पुत्र के साथ जुड़ा हुआ है, वह आत्मा के ईश्वरत्व और व्यक्तित्व को दर्शाता है। यूहन्ना 20:21, और 22, जिसे मैं पिन्तेकुस्त की प्रत्याशा मानता हूँ।

यीशु ने कहा, "तुम पर शांति हो, जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।" और जब उसने यह कहा, तो उसने उन पर फूंक मारी और कहा, "पवित्र आत्मा ग्रहण करो। यदि तुम किसी के पाप क्षमा करते हो, तो वे क्षमा किए जाते हैं।"

यदि आप किसी को क्षमा करने से रोकते हैं, तो वह रोक दिया गया है। यह सुसमाचार प्रचार करने में प्रेरितों की सेवकाई पर वादा किया गया परमेश्वर का आशीर्वाद है। और इसमें क्या शामिल है? आत्मा पापों की क्षमा उत्पन्न करती है और परमेश्वर के वचन के प्रचार को आशीर्वाद देती है।

ओह, यह परमेश्वर द्वारा आदम और हव्वा में जीवन फूंकने, उन्हें पुनर्जीवित करने, उनके शरीर को जीवित करने का संदर्भ है। और यहाँ, यीशु पवित्र आत्मा को फूंककर सृष्टिकर्ता, या बेहतर कहें तो पुनः-सृष्टिकर्ता की जगह लेता है। अर्थात्, जैसा कि प्रेरितों के काम 2 गवाही देता है, पवित्र आत्मा।

यीशु, पिन्तेकुस्त यीशु का कार्य है। जितना उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान उसके कार्य हैं, उतना ही वह पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा को उंडेलता है। वह परमेश्वर का कार्य करता है।

यहाँ, यीशु की पिन्तेकुस्त की भविष्यवाणी में पापों की क्षमा के साथ पवित्र आत्मा शामिल है। आत्मा परमेश्वर है। हम पहले ही 2 कुरिन्थियों 1 से देख चुके हैं कि पौलुस एक दुर्लभ व्यक्ति नहीं है।

उसने अपनी योजनाएँ बदलीं, लेकिन कुरिन्थियों को बचाने के लिए भी उसने कहा कि वह ऐसा नहीं कर रहा है; वह सुसमाचार का सच्चा प्रचारक है। वह अपना संदेश नहीं बदलता। और वास्तव में, परमेश्वर ने हम पर अपनी मुहर लगा दी है।

और वह यह है कि उसने हमें सुसमाचार और उद्धार की सच्चाई की गारंटी के रूप में हमारे हृदय में आत्मा दी है। मुहर लगाना, मुहर आत्मा है। आत्मा परमेश्वर है।

रहस्योद्घाटन का उद्धार, रहस्योद्घाटन का अभिवादन, क्षमा करें, रहस्योद्घाटन की पुस्तक, अभिवादन, पुत्र को पिता और आत्मा के साथ इस तरह से जोड़ती है कि केवल ईश्वर ही इससे जुड़ सकता है। आपको अनुग्रह और शांति मिले, यूहन्ना सात कलीसियाओं को लिखता है, उससे जो है और जो था और जो आने वाला है, वह शाश्वत पिता है, और उन सात आत्माओं से जो उसके सिंहासन के सामने हैं, वह पवित्र आत्मा है, और यीशु मसीह से, जो विश्वासयोग्य गवाह है, मृतकों में से ज्येष्ठ और पृथ्वी के राजाओं का शासक है। यीशु, क्षमा करें, आत्मा शाश्वत पिता और पुत्र के साथ जुड़ी हुई है जो पैगंबर और राजा और पुजारी और राजा है।

वह परमेश्वर के लिए बोलने वाला एक वफ़ादार गवाह है। वह मरे हुए में से ज्येष्ठ है, जो हमारे स्थान पर मरने वाले याजक होने की बात करता है। और वह पृथ्वी के राजाओं का शासक है।

वह राजा है। आत्मा यहाँ प्रकाशितवाक्य 1 में इस अभिवादन के साथ जुड़ा हुआ है क्योंकि केवल परमेश्वर ही इससे जुड़ा हो सकता है। संक्षेप में, आत्मा का कार्य, फिर से, पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व को और भी अधिक दर्शाता है।

हमने पहले ही उत्पत्ति 1:1, और 2 को देखा है। बपतिस्मा के समय यीशु पर पवित्र आत्मा के कबूतर की तरह उतरने के समान, मत्ती 3, 16, उत्पत्ति 1 में आत्मा का उपयोग किया गया है और

पक्षी की कल्पना का उपयोग करके आत्मा के बारे में बात की गई है। आत्मा सृष्टि, दिव्य सृष्टि पर मंडराती है। अय्यूब 33:4 में, एलीहू बोलता है, परमेश्वर की आत्मा ने मुझे बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस मुझे जीवन देती है।

आत्मा सर्वशक्तिमान के समानांतर है। आत्मा ही सृष्टिकर्ता है। एलीहू कहता है कि परमेश्वर की आत्मा ने मुझे बनाया है।

सर्वशक्तिमान की सांस मुझे जीवन देती है। जब उत्पत्ति और अय्यूब संकेत देते हैं कि आत्मा ने सृष्टि में भूमिका निभाई, तो वे उसके ईश्वरत्व का संकेत देते हैं। हम अपने अगले व्याख्यान में आत्मा के कार्य को जारी रखेंगे और इसे पवित्रशास्त्र के बारे में और अधिक विस्तार से देखेंगे और पुराने नियम में आत्मा के कार्य के कई अलग-अलग पहलुओं का विस्तृत अध्ययन करेंगे, और फिर नए नियम में आत्मा के कार्य और विशेष रूप से यीशु में उसके कार्य के बारे में जानेंगे।

यह बहुत ही रोचक विषय है, इससे पहले कि हम आत्मा की मुख्य सेवकाई के बारे में बात करें, जो कि मसीह के साथ एकता है। आपके अच्छे ध्यान और रुचि के लिए धन्यवाद।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन की पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 2 है। पवित्र आत्मा ईश्वर है।